द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित साहित्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है किस विधि से कार्य किया गया है तब वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभः–

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।

2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अन्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

2.3 शोध से संबंधित कार्य :-

कुमार (1957) ने "किशोरों की सृजनात्मकता, बुद्धि समायोजन एवं मूल्यों के मध्य संबंधों का पीएच.डी. हेतु आगरा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला। (i) सृजनात्मकता एवं बुद्धि, सृजनात्मकता एवं समायोजन तथा सृजनात्मकता एवं मूल्यों के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया (ii) किशोरावस्था (13 से 18 वर्ष) में सृजनशीलता में वृद्धि पायी गयी। (iii) परिपक्वता के समीप (लगभग 18 वर्ष) के किशोरों में वृद्धि के स्तरों में वृद्धि का प्रभाव पाया गया।

एस्पाल्डिग (1963) ने "सृजनात्मकता पर शिक्षक के व्यक्तित्व व्यवहार एवं शिक्षण विधि के प्रभाव का अध्ययन" कर यह निष्कर्ष निकाला कि अध्यापक की भूमिका सृजनात्मक शक्ति के विकास में सहायक होती है।

Regional Institute of Education
LIBRARY

हुसैन एम.जी. (1974) ने "सृजनात्मकता तथा लिंग भिन्नता का अध्ययन किया।" जिसके लिये उन्होनें मेंहदी परीक्षण सृजनात्मकता मापन हेतु लिया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि बालिकाओं की सृजनात्मकता बालकों से अधिक होती है।

सिंह आर. (1975) के अध्ययन की उद्देश्य कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनके लिंग भेद व समायोजन के साथ संबंध था। अध्ययन में व बेल्स समायोजन इनवेन्ट्री का उपकरण के रूप में प्रयोग किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि बालिकाएँ सृजनात्मकता के सभी आयामों में बालकों से श्रेष्ठ होती हैं। तथा मौलिकता का सामाजिक समायोजन से सार्थक व सकारात्मक संबंध होता है।

सिंह डी. (1978) ने "सृजनशील छात्र का व्यक्तित्व से संबंध का अध्ययन किया।" अध्ययन हेतु उन्होनें H.S.P.Q. तथा मेंहदी शाब्दिक परीक्षण, जलोटा मानसिक योग्यता परीक्षण, वैज्ञानिक सृजनात्मकता परीक्षण व उपलब्धि हेतु वार्षिक परीक्षाफल को उपकरण के रूप में प्रयोग किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि सृजनशील छात्र, गैर सृजनशील छात्र से अमूर्त चिंतन, भावात्मक स्थिरता, स्वतंत्रता, लचीलेपन, आत्म अवधारण नियंत्रण में श्रेष्ठ होते हैं। शहरी छात्र वैज्ञानिक सृजनात्मकता में ग्रामीण छात्रों से श्रेष्ठ होते हैं।

मेनन (1980) ने "अंग्रेजी माध्यम के हायर सेकण्डरी स्तर के छात्रों पर अंग्रेजी भाषा में सृजनात्मकता का अध्ययन पीएच.डी. हेतु दिल्ली विश्वविद्यलय में किया और यह निष्कर्ष निकाला कि (i) सृजनात्मकता का सबसे अधिक भाषा, उसके उपरान्त उपलब्धि व बुद्धि से सहसंबंध है।(ii) बुद्धि का सार्थक संबंध भाषा के साथ है।

(iii) तदोपरान्त सृजनात्मकता व उपलब्धि से है। (iv) पुरूष शिक्षकों के महात्वाकांक्षा के स्तर का मौलिकता से सार्थक सह संबंध है।

शर्मा ए.के. (1981) ने अपसारी चिंतन का उपलब्धि व लिंग भेद से संबंध पर अध्ययन किया। सृजनात्मकता के लिये पासी का टेस्ट, उपलब्धि के लिये वार्षिक परीक्षा फल को उपकरण के रूप में प्रयोग किया अध्ययन से स्पष्ट हुआ की छात्रों की उच्च व निम्न उपलब्धि का सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लिंग भेद आधार पर सृजनात्मकता में कोई अंतर नहीं होता।

बंसल, रेणु (1981) ने आदिवासी छात्राओं की सृजनात्मकता एवं उनके परिवार के सामाजिक आर्थिक स्तर के घटकों में सहसंबंध कर यह निष्कर्ष निकाला (i) आदिवासी छात्राओं की कुल सृजनात्मकता तथा उनके घटकों का छात्राओं के परिवार सदस्यों का भिन्न-भिन्न अवसरों पर गांवों में बुलाये जाने के साथ सार्थक संबंध नहीं है। (ii) घर में पत्रिकायें होना सृजनात्मकता को प्रभावित करता है। (iii) आदिवासी छात्राओं के परिवार के सदस्यों का विभिन्न संस्थाओं में सदस्य लेने के साथ सार्थक संबंध नहीं है।

सिंह (1982) ने "हाईस्कूल के छात्रों की सृजनात्मकता के मापन का अध्ययन बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक, आर्थिक के संदर्भ में किया इसके 400 शहरी एवं 400 ग्रामीण छात्रों को लिया गया। प्रदत्तों में एकीकरण के लिए जोशी द्वारा निर्मित मानसिक योग्यता परीक्षण एवं बांकर मेंहदी के सृजनात्मकता परीक्षण को लिया गया।

वाजपेयी अलका (1982) ने "पुरूष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सृजनात्मकता का दृश्चिन्तन एवं महात्वाकांक्षा से संबंध

का अध्ययन" किया और यह निष्कर्ष निकाला (i) लिंगभेद के अनुसार दृश्चिन्ता एवं सृजनात्मकता में कोई सहसंबंध नहीं है। (ii) महात्वाकांक्षा का स्तर व प्रवाह के अंको का पुरूष शिक्षकों के संदर्भ में सार्थक संबंध है। (iii) पुरूष एवं महिला शिक्षकों के संदर्भ में महात्वाकाक्षाओं आर्थिक स्तर के मापन हेतु सामाजिक व आर्थिक स्तर प्रश्नावली का प्रयोग किया गया परीक्षण के उपरान्त सृजनात्मकता का मध्यांक शहरी बालकों का ग्रामीण बालकों की तुलना में अधिक पाया गया।

जिन्दल (1984) ने "शाब्दिक सृजनात्मकता एवं अशाब्दिक सृजनात्मकता के संबंध का अध्ययन किया।" इसके आलावा कक्षा 9वीं कक्षा 10वीं के विषयों का निष्पादन सृजनात्मकता के संदर्भ में भी किया। इसके लिए 3952 विद्यार्थियों में से 400 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिकी की विधि की सहायता से किया गया। प्रदत्तों के एककीकरण के लिए मेंहदी के शाब्दिक एवं अशाब्दिक सृजन परीक्षण को लिया गया। मापनी के आधार पर पाया गया कि सृजनात्मक ढ़ंग से सोंचने की योग्यता होने पर उपलब्धि पायी गयी। इसके आलावा इस आयु समूह के बालकों के परीक्षण मध्यांकों में स्थान देने योग्य अंतर पाया गया।

रैना (1984) ने "13 वर्ष से 18 वर्ष विद्यालयीन छात्रों में बृद्धि के सापेक्ष सृजनात्मकता का विकास" कर यह निष्कर्ष निकाला- (i) राष्ट्रीय प्रतिमा वाले चयनित व अचयनित समूह के छात्रों की मौखिक सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है। परन्तु दृश्य सृजनात्मकता में कोई अंतर नहीं होता। (ii) सामान्य बुद्धिक्षमता के अंकों का मौखिक व दृश्य सृजनात्मकता के परीक्षण से कोई संबंध नहीं है।

रामकृष्ण (1986) ने "हिन्दी में साहित्यिक सृजनात्मकता और स्कूल जानेवाले बच्चों के बीच सहसंबंध का अध्ययन पीएच.डी. हेतु गोरखपुर विश्वविद्यालय में किया और यह निष्कर्ष निकाला कि छात्रों में असमाधान कारक हिन्दी साहित्यिक सृजनात्मकता और सामाजिक – आर्थिक परिस्थिति पायी जाती है। छात्रों ने हर टेस्ट में ज्यादा अंक लिये। असृजनशील छात्रों और छात्राओं के मुकाबले सृजनात्मक छात्रों और छात्राओं ने ज्यादा अंक लिए।

नंदमपवार बीं.एस. (1986) ने "बच्चों में भाषिक सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन पीएच.डी. हेतु नागपुर विश्वविद्यालय में किया और यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रायोगिक पद्धति से पढ़ाए गये छात्रों में दूसरे समुह से अच्छा प्रदर्शन रहा। उनमें भाषिक कुशलता ज्यादा पायी गई।

राजगोपाल (1988) ने "माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का कक्षा के वातावरण, उपलब्धि, प्रेरणा व मानसिक योग्यता का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन पीएच.डी. हेतु सरदार पटेल विश्वविद्यालय में किया और यह निष्कर्ष निकाला कि (i) कक्षा के वातावरण और बुद्धि सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव डालती है। (ii) कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्रों की सृजनात्मकता कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में अधिक है। (iii) शैक्षिक उपलब्धियों का सृजनात्मकता पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

गौरी रायकवार (2001) ने "विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के मुस्लिम बालक–बालिकाओं की बृद्धि एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन" एम.एड. हेतु बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय में किया

और यह निष्कर्ष निकाला कि (i) उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर एवं माध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर की मुस्लिम विद्यार्थियों के बौद्धिक क्षमता के माध्य सार्थक अन्तर नहीं है। (ii) मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के मुस्लिम बालक–बालिकाओं की बौद्धिक क्षमता के माध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। (iii) मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिम बालक–बालिकाओं की बौद्धिक क्षमता के माध्यम कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चौहान दशरथ (1991) ने "निराश्रित एवं सामान्य किशोंरो की बुद्धिलब्धि एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला की – (i) निराश्रित किशोरों की सृजनात्मकता भी सामान्य किशोरों की भांति ही होती है। (ii) निराश्रित किशोरों की बुद्धिलब्धि भी सामान्य किशोंरों की भांति ही होती है।

सिंह रमेश विंशट (1993) ने "सृजनात्मकता का लिंगभेद व संस्कृति से संबंध का अध्ययन किया।" अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आदिवासी और गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अधिक सृजनशील होते हैं।

सिंह विजेन्दर (1994) ने " प्रवाह व विविधता के विकास में आयु व उपलब्धि का अध्ययन किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उपलब्धि का सृजनात्मकता पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

मेनन पाण्डेय (1995) ने "आदिवासी, औद्योगिक तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता तथा मूल्य वरीयता" का एम.एड. हेतु बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और यह

निष्कर्ष निकाला (i) आदिवासी, औद्योगिक एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता में अंतर नहीं होता। (ii) औद्योगिक क्षेत्र के विद्यार्थियों में सामाजिक और आर्थिक मूल्य का विकास अन्य क्षेत्रों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक होता है। (iii) लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों की वैज्ञानिक-सृजनात्मकता में अंतर नहीं पाया गया।

2.4 उपसंहार :-

पूर्व शोधों के विस्तृत अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि बुद्धि और सृजनात्मकता के बारे में अधिक कार्य किए गये। उससे अनेक प्रकार के निष्कर्ष निकाले गये। किशोरावस्था में सृजनात्मकता अधिक होती है। छात्रा में ज्यादा पायी जाती है। छात्राओं में कम पायी जाती है। शैक्षिक उपलब्धियों का सृजनात्मकता पर अनुकूल प्रभाव पाया गया। इस प्रकार निष्कर्ष आये है। लेकिन भाषा सृजनशीलता और हिन्दी की उपलब्धि के बारे में ऐसा कोई शोध नहीं हुआ है। इस तरह का कोई शोध न होने के कारण इस तरह के शोध की आवश्यकता महसूस होती है।

✦✦✦✦